1. पर्यावरण का अर्थ एवं परिभाषा

पर्यावरण एक व्यापक शब्द है। पर्यावरण का तात्पर्य समूचे भौतिक एवं जैविक विश्व से है जिसमें जीवधारी रहते है, बढ़ते है, पनपते है, और अपनी स्वाभाविक प्रकृतियो का विकास करते है।

पर्यावरण शब्द ''परि'' एवं ''आवरण'' शब्दों से मिलकर बना है अर्थात ''चारो और के आवरण'' को पर्यावरण कहा जा सकता है। चारो और के आवरण के भीतर जो कुछ भी सम्मिलित रहता है पर्यावरण के अन्तर्गत आता है।

पर्यावरण का नाम आते ही भूपटल के बृहद रूप–जल, मृदा, मरूस्थल, चट्टान की कल्पना मन मे आ जाती है। पर्यावरण के इन प्रकारो की और भी अधिक सटीक अभिव्यक्ति, भौतिक प्रभावो, नमी, ताप, पदार्थो के गठन इत्यादि की विभिन्नताओं तथा जैवीय प्रभावो के रूप मे भी की जा सकती है। मृदा तथा चट्टानों के समान ही दूसरे जीव भी पर्यावरण के ही अंग है। इस प्रकार प्रकृति मे जो कुछ भी हमको परिलिक्षित होता है, वायु, जल, मृदा, पादप तथा जीवजन्तु, वन–सभी सम्मिलित रूप मे पर्यावरण की रचना करते है[1]।

रोस. ई. जे के अनुसार

पर्यावरण एक बाह्य शक्ति है। जो हमको प्रभावित करती है।

निकोलस के अनुसार

पर्यावरण उन समस्त बाहरी दशाओं तथा प्रभावों का योग है जो प्रत्येक प्राणी के जीवन एवं विकास पर प्रभाव डालते है[2]।

Scanned by CamScanner

पी.सी.सी के अनुसार

पर्यावरण का अर्थ उन दशाओं के योग से होता है जो मनुष्य को निश्चित समय में निश्चित स्थान पर आवृत्त करती हैं।

फिटिंग के अनुसार

जीवन की परिस्थितियों में समस्त तथ्य मिलकर पर्यावरण का निर्माण करते है।

ब्लैक डिक्शनरी के अनुसार

ब्लैक'स डिक्सनरी में **युनाइटेड स्टेट बनाम अमाडियो**[1] के मामले में दी गई परिभाषा को स्वीकार करते हुये पर्यावरण की अति व्यापक परिभाषा को अंगीकृत किया है। अस्तु पर्यावरण भौतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, सौंदर्य शास्त्रीय और सामाजिक परिस्थितियों और तथ्यों का समुच्च है जो अपने द्वारा आवृत्त सम्पत्ति की वांछनीयता और मूल को प्रभावित करते है और जो लोगों के जीवन की उन्मत्ता को भी प्रभावित करते है।

डी.डेविस के अनुसार

पर्यावरण से अभिप्राय जीवो को चारों और से घेरे उन सभी भौतिक रूपों से है। जिसमें वह रहता है। जिनका उसकी आदतों, उसकी क्रियाओं पर प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार के रूपों में भूमि, जलवायु, मिट्टी की प्रकृति, वनस्पति, प्राकृतिक संसाधन, खनिज, जल–थल आदि सम्मिलित है।

हर्स कोविट्ज एम.जे. के अनुसार

पर्यावरण उन सभी बाहरी दशाओं और प्रभावों का योग है। जो जीवधारियों के जीवन, उनके विकास और उनकी अनुक्रियाओं को प्रभावित करता है।

गाउडी ए. के अनुसार

सामान्य रूप से पर्यावरण को प्रकृति के समतुल्य माना जा सकता है। जिसके अंतर्गत ग्रहीय पृथ्वी के भौतिक तत्वों को सम्मिलित किया जाता है। ये भौतिक तत्व, जैव मंडल में विभिन्न जीवों को आधार प्रदान करते है। उन्हें आश्रय

Scanned by CamScanner

देते है। उनके विकास तथा संवहन हेतु आवश्यक दशायें प्रदान करते है। और उन्हें प्रभावित करते है।

तासंले ए.जी. के अनुसार

प्रभावकारी दशाओं का वह योग जिसमें जीव रहते है। पर्यावरण या वातावरण कहलाता है।

डा. विजय कुमार तिवारी के अनुसार

पर्यावरण वह भौतिक परिवेश है। जो जीव–जगत को आवृत करता है। उसके विकास को प्रभावित करता है। तथा स्वयं उससे प्रभावित होता है। पर्यावरण,पृथ्वी तल पर जीवों के विकास, संवर्धन एवं सुरक्षा हेतु ऐसी दशायें उत्पन्न करता है। जिनके बिना जीवन संभव नहीं है।

डा. निशांत सिंह के अनुसार

'जीव जिस माहौल या परिवेश में रहते है। वह उसका पर्यावरण कहलाता है। जीव और पर्यावरण परस्पर एक दूसरे को प्रभावित करते है। परस्पर एक–दूसरे से प्रभावित होते हैं।

डगल्सव हॉलेंड के अनुसार

पर्यावरण या वातावरण वह शब्द है। जो समस्त बाह्मः शक्तियों, प्रभावों और परिस्थितियों का सामूहिक रूप से वर्णित करता है। जो जीवधारी के जीवन, स्वभाव, व्यवहार ओर अभिवृद्धि, विकास तथा प्रोढ़ता पर प्रभाव डालता है।

उपरोक्त चर्चा से स्पष्ट है। पर्यावरण का तात्पर्य, हमारे चारों ओर के उस परिवेश एवं वातावरण से हैं जिससे हम घिरे हुए है। दूसरे शब्दों में, पर्यावरण वह सब–कुछ है। जो जीव–जंतुओं को चारों ओर से घेरे रहता हैं और उसे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। पर्यावरण उन समस्त बाह्मः दशाओं और प्रभावों (जैसे–जल,थल,वायु,तापमान, मौसम,मिट्टी के प्रकार, पेड–पौधो आदि।)का योग है। जो प्राणी के जीवन और विकास पर प्रभाव डालते है। विशेष बात यह है। कि पर्यावरण में हमारी विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक गतिविधियां भी

Scanned by CamScanner

सामाहित होती है। इस प्रकार पर्यावरण, प्रकृति द्वारा दिया गया एक अमूल्य उपहार

Scanned by CamScanner